हिन्दी पख़वाड़ा : उद्घाटन समारोह रिपोर्ट

भाकृअनुप–केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता–700120

कार्यालय में काम–काज हेतु राजभाषा के रुप में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा उसके प्रभावों में गति लाने हेतु संस्थान में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन संस्थान के निदेशक महोदय, डा. जीबन मित्र द्वारा किया गया तथा मुख्य वक्ता/अतिथि के रूप में डा. चन्द्र गोपाल शर्मा, पूर्व उप महा प्रबंधक (राजभाषा), पूर्व रेलवे, कोलकाता को आमंत्रित किया गया था। उद्घाटन समारोह में संस्थान के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक, डा. जीबन मित्र ने समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए राजभाषा हिन्दी के सरल शब्दों के प्रयोग पर बल दिया तथा साथ ही इस कार्यक्रम को सफल बनाने में उनकी सहभागिता दर्ज कराने का आग्रह किया। डा. सुब्रत सतपथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा ने अपने उद्घाटन अभिभाषण में संस्थान के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों से कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने का आह्वान किया साथ ही रेशा किरण, भाग–2 का प्रकाशन शीघ्र करने की अपील की। मुख्य अतिथि ने राजभाषा के सुगम प्रयोग के बारे में विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने राजभाषा को अधिक कारगर ढंग से संस्थान में लागू करने के लिए सुझाव दिया।

कार्यक्रम का संचालन डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने श्री मनोज कुमार राय, सहायक के सहयोग से किया। इस सुअवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें हिन्दी पखवाड़ा के अतंर्गत आयोजित किए जानेवाली विभिन्न हिन्दी प्रतियोगितायें (तत्कालिक भाषण (एक्सटेम्पोर) (हिन्दीत्तर तथा हिन्दी भाषियों के लिए), हिंदी टंकण (सभी वर्गों के लिए), हिन्दी निबंध लेखन (हिन्दीत्तर भाषियों के लिए), हिन्दी अनुवाद (हिन्दीत्तर तथा हिन्दी भाषियों के लिए), वाद–विवाद (हिन्दीत्तर भाषियों के लिए), हिन्दी टिप्पण, मसौद/प्रारूप के लिए) आदि प्रतियोगिताओं की जानकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को देते हुए उनसे यह आग्रह किया कि वे इन प्रतियोगिताओं में अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनाएं । कुछ वक्ताओं ने अपने वक्तव्य में कहा कि संविधान सभा द्वारा संघ सरकार का राज–काज चलाने के लिए तथा केन्द्र राज्य के बीच सम्पर्क भाषा की भूमिका निभाने का उत्तरदायित्व हिन्दी को ही सौंपा है क्योंकि यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है।

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान संस्थान के हिन्दीत्तर भाषी तथा हिन्दी भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए तत्कालिक भाषण (एक्सटेम्पोर), हिंदी टंकण, हिन्दी निबंध, हिन्दी अनुवाद, वाद–विवाद तथा हिन्दी टिप्पण, मसौद/प्रारूप लेखन आदि विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की गईं जिसमें संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

हिन्दी पख़वाड़ा : समापन समारोह रिपोर्ट

भाकृअनुप–केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता–700120

भाकृअनुप–केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का अयोजन दिनांक 28 सितम्बर, 2018 को किया गया । इस अवसर पर श्रीमती सुधा मिश्रा पूर्व राजभाषा अधिकारी, दक्षिण पूर्व रेलवे, गार्डनरीच कोलकाता संस्थान की ओर से मुख्य वक्ता के रूप में सादर आमंत्रित थीं। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक, डा. जीबन मित्र, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भाकृअनुप–केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेषा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डा. डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन, डा. एस. मित्र, प्रभारी , ए.आई.एन.पी., डा. सुनीति कुमार झा, प्रभारी, कृषि प्रसार, श्री पी.के. जैन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं श्री गौरांग घोष, वित्त एवं लेखा अधिकारी मंचासीन थे। अपने अध्यक्षीय संबोधन में निदेशक महोदय में डा. जीबन मित्र ने कहा कि भारत विविध संस्कृति वाला देश है। जिसमें अनेकों भाषाएं बोली जाती हैं मगर राजभाषा हिन्दी का अपना अलग ही स्थान है। राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में इस संस्थान ने अच्छी प्रगति की है। इस अवसर पर उन्होंने अपने अभिभाषण में कहा कि हिन्दी राजभाषा होने के साथ ही अत्यंत सरलतम भाषा भी है । इसके प्रसार एवं व्यवहार में तीव्रतम विकास अति आवश्यक है। इसके प्रचार–प्रसार के लिए उन्होंने संस्थान के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने पर बल दिया तथा संतोष व्यक्त किया कि प्रशासननिक खण्ड से हिन्दी में काफी हद तक हिन्दी टिप्पण/मसौदा लेखन/पत्र लेखन का कार्य किया जा रहा जो सराहनीय है। उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा साधारण जनमानस किसान भाइयों के साथ संपर्क बनाने का बेहतर माध्यम है क्योंकि इस भाषा को लगभग हर भारतीय समझता या बोलता है। श्रीमती सुधा मिश्रा पूर्व राजभाषा अधिकारी, दक्षिण पूर्व रेलवे, गार्डनरीच कोलकाता ने अपने व्याख्यान में भारत सरकार की राजभाशा नीति को ध्यान में रखते हुए सरकारी कार्यालयों में अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने की अपील की। डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन प्रभाग ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारे संस्थान में हिन्दी में काफी कार्य हो रहा है तथा इसे आगे भी जारी रखना चाहिए । डा. एस. मित्रा, प्रभारी, ए.आई.एन.पी ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी में काम करना आसान है हमें हर क्षेत्र में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करना चाहिए। श्री पी.के. जैन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने कहा कि राजभाषा हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो भारत के एक राज्य को दूसरे राज्यों से जोड़ती है। उन्होंने कहा कि संविधान में हिंदी को पूर्ण रूप से राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, हमें निष्ठा भाव से इसे मजबूती प्रदान करनी चाहिए। श्री गौरांग घोष, वित्त एवं लेखा अधिकारी ने कहा कि भारत की सभी भाषाएं एक दूसरे की परिपूरक हैं अतएव हम भारत के किसी भी कोने में जाएं तो हमें सभी भाषाओं में सामंजस्य नजर आती है। उन्होंने लेखा परीक्षा एवं लेखा अनुभाग में हो रहे हिन्दी के प्रयोग पर संतोष व्यक्त करते हुए इसे और व्यापक बनाने का अनुरोध किया।

समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल सभी विजेता प्रतियोगियों को (क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) डा. जीबन मित्र, निदेशक महोदय, डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुधार, डा. एस. मित्रा, प्रभारी, ए.आई.एन.पी., डा. सुनीति कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कृषि प्रसार अनुभाग, श्री पी.के.जैन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी तथा मुख्य वक्ता, श्रीमती सुधा मिश्रा पूर्व राजभाषा अधिकारी, दक्षिण पूर्व रेलवे, गार्डनरीच कोलकाता के कर कमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

निदेशक महोदय ने संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा तथा इस दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन पर अपनी खुशी जाहिर की तथा आशा व्यक्त की कि इस संस्थान में हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर प्रगति होगी। कार्यक्रम का समापन डा. सुनीति कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कृषि प्रसार अनुभाग के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।